# जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

## SYLLABUS

(Three/Four Year Under Graduate Programme)

शास्त्री / B.A.- आधुनिक ज्ञान विज्ञान

## पाठ्यक्रम

## I & II Semester

## III & IV Semester

## तृतीय वर्ष वार्षिक पद्धति

## Examination -2024-25

As per NEP-2020

आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकायाध्यक्ष.

(प्रो० डॉ शालिनी सक्सेना)

संयोजक

(डॉ इन्दिरा खत्री)

**जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय**

**जयपुर**

**पाठ्यक्रम (SYLLABUS)**

**शास्त्री/बी ए प्रथम सेमेस्टर**

**हिंदी साहित्य प्रथम प्रश्नपत्र-आदि काव्य**

प्रश्नपत्र
लिखित परीक्षा 70 अंक
आंतरिक मूल्यांकन 30 अंक
कुल 100 अंक

| | |
|---|---|
| **उद्देश्य** | 1 विद्यार्थियों को आदिकाल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि परिस्थितियों से अवगत कराना<br>2. आदिकालीन काव्य एवं कवियों से परिचय कराना<br>3. आदिकालीन साहित्य के स्वरूप, भाषा एवं शैली की विकास यात्रा से अवगत कराना<br>4. आदिकालीन साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट करना<br>5. विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना |
| **अधिगम प्रतिफल** | 1. आदिकालीन परिवेश राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा अन्य आदिकालीन परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे2. आदिकालीन साहित्य के शोध की नवीन दृष्टि का विकास हो सकेगा<br>3.आदिकाल की सामान्य परिस्थितियों तथा विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे<br>4. प्रमुख आदिकालीन कवियों और उनकी रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगे |

**प्रश्नपत्र का अंक विभाजन**

अंक विभाजन प्रश्न संख्या 1 ( सप्रसंग व्याख्याओं का है) कुल चार काव्यांश एक कवि से एक व्याख्या आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे अंक 8×4= 32

प्रश्न संख्या 2,3,4,5 निबंधात्मक प्रश्न है, प्रत्येक कवि से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 7×4= 28

प्रश्न संख्या 6 ( संक्षिप्त टिप्पणी ) आदिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियां एवं अंतर्दशाएं 2 टिप्पणी आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 2×5=10

संयोजक -

संकायाध्यक्ष
(प्रो० शालिनी सक्सेना)

**इकाई I**

: आदिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां :आदिकालीन साहित्य की अंतरधाराएं ( सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, एवं रासो साहित्य तथा लौकिक काव्य)

**इकाई II**

(i) ढोला मारू रा दुहा: संपादक नरोत्तम दास स्वामी ,सूर्य कारण पारीक, राम सिंह दोहा संख्या 8,9,10,19,20,21,37,38,40,49,52, 61, 69, 112, 116 कुल 15 दोहे

(ii) विद्यापति, संपादक शिवप्रसाद सिंह
- नन्दक नन्दन कदम्बेरि तरुतरे (8) -सुन रसिया अब न बजाऊ बिपिन बँसिया (9)
- -देख देख राधा रूप अपार (10)
- चाँद सार लए मुख घटना करु लोचन चकित चकोरे (14)
- विरह व्याकुल बकुल तरुवर, पेखल नंदकुमार रे (26)
- कुंज भवन से धलि मेलि हे रोकल गिरधारी (36)
- सखि हे कतहु न देखि मधाई (55)
- सखि है कि पुछसि अनुभव मोय (102)

(iii)- बीसलदेव रास, संपादक माता प्रसाद गुप्त 1,3,4,6,7,8,9,10

(iv) पृथ्वीराज रासो - चंदबरदाई

(सम्पादक : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और नामवर सिंह)

(कैमास करनाटी प्रसंग)

(छन्द संख्या 1 से 5 तक)

(1)दिल्ली चहुआंन।.....मातुल सुरत ॥

(2)सयन इक्क सवसाहि..... धरनिय बिसम ॥

(3)राज काज दाहिम्म.....असोक सुष ॥

(4)राज चित्त कैमास ..... उदधि मिलि ।

(5)मंदी देश .....हित्त ॥

आंतरिक मूल्यांकन हेतु आदिकालीन साहित्य से सम्बंधित विषयों पर निबन्ध लेखन, परियोजना,असाइनमेंट,चार्ट,प्रतियोगिता या मौखिक गतिविधियां 30 अंक

अनुशंसित ग्रंथ-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रधारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. नगेन्द, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी सूफी काव्य की भूमिका रामपूजन तिवारी

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

जयपुर

# पाठ्यक्रम (SYLLABUS)

## शास्त्री/बी ए प्रथम सेमेस्टर

## हिंदी साहित्य द्वितीय प्रश्नपत्र- हिन्दी कहानी

प्रश्नपत्र
लिखित परीक्षा 70 अंक
आंतरिक मूल्यांकन 30 अंक
कुल 100 अंक

| | |
|---|---|
| **उद्देश्य (Objectives)** | 1 विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति और विश्लेषणात्मक योग्यता का विकास करना।<br>2. कथा साहित्य के विश्लेषण की समझ और संवेदनात्मक अनुभूति का विकास करना।<br>3. प्रमुख कथाकारों एवं उनकी रचनाधर्मिता का परिचय कराना।<br>4 कहानी कला को विकसित करना। |
| **अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)** | अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)<br>1. जीवन की यथार्थ अनुभूति से परिचय हो सकेगा।<br>2. कथा लेखन तथा उसके प्रभाव का विश्लेषण सम्भव हो सकेगा।<br>3. आदर्श और सभ्य नागरिक बन सकेंगे।<br>4. आत्माभिव्यक्ति की भावना विकसित हो सकेगी तथा भावी लेखन की पृष्ठभूमि का विकास होगा। |

### प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (I,II,III) में विभाजित है।
अंक विभाजन प्रश्न संख्या 1 ( सप्रसंग व्याख्याओं का है) कुल चार अवतरण एक कहानी से एक व्याख्या आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे अंक 8×4= 32
प्रश्न संख्या 2,3,4,5 निबंधात्मक प्रश्न है, प्रत्येक कहानी से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 7×4= 28
प्रश्न संख्या 6 ( संक्षिप्त टिप्पणी )हिन्दी कहानी साहित्य स्वरूप,उद्भव एवं विकास 2 टिप्पणी आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 2×5=10

### इकाई - 1

कहानी परिभाषा एवं तत्त्व
हिन्दी कहानी के उद्भव एवं विकास के प्रमुख चरण परिभाषा एवं तत्त्व
हिन्दी कहानी के प्रमुख आन्दोलन नयी कहानी, सचेतन कहानी, समानान्तर कहानी, साठोत्तरी कहानी, समकालीन कहानी
प्रेमचन्द की कहानी कला
पाठ्यक्रम में निर्धारित किसी एक कहानी की मूल संवेदना एवं शिल्प-विधान
हिन्दी के प्रमुख कहानीकार

इकाई - 2

उसने कहा था- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
पूस की रात- प्रेमचंद
पुरस्कार -जयशंकर प्रसाद
पाजेब –. जैनेंद्र
परदा - यशपाल

इकाई - 3

आर्द्रा- मोहन राकेश
यही सच हैं- मन्नू भण्डारी
गदल - रांगेय राघव
सिक्का बदल गया- कृष्णा सोबती
पिक्चर पोस्टकार्ड- निर्मल वर्मा

आंतरिक मूल्यांकन हेतु हिन्दी कहानी साहित्य से सम्बंधित विषयों पर निबन्ध लेखन, परियोजना,असाइनमेंट,चार्ट,प्रतियोगिता या मौखिक गतिविधियां 30 अंक

अनुशंसित ग्रंथ-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रधारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. नगेन्द, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी सूफी काव्य की भूमिका रामपूजन तिवारी
5. मानसरोवर भाग-1 प्रेमचन्द
6. हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास रामस्वरूप चतुर्वेदी
7. हिन्दी कहानी का विकास मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. कहानी नई कहानी नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. कहानी की रचना प्रकिया परमानन्द श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

# जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

जयपुर

## पाठ्यक्रम (SYLLABUS)

**शास्त्री/बी ए द्वितीय सेमेस्टर**

**हिंदी साहित्य प्रथम प्रश्नपत्र (भक्तिकाव्य )**

प्रश्नपत्र
लिखित परीक्षा 70 अंक
आंतरिक मूल्यांकन 30 अंक
कुल 100 अंक

| | |
|---|---|
| **उद्देश्य** | 1 विद्यार्थियों को भक्तिकाल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि परिस्थितियों से अवगत कराना<br>2. भक्तिकालीन काव्य एवं कवियों से परिचय कराना<br>3. भक्तिकालीन साहित्य के स्वरूप, भाषा एवं शैली की विकास यात्रा से अवगत कराना<br>4. भक्तिकालीन साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट करना<br>5. विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना |
| **अधिगम प्रतिफल** | 1. भक्तिकालीन परिवेश राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा अन्य आदिकालीन परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे2. आदिकालीन साहित्य के शोध की नवीन दृष्टि का विकास हो सकेगा<br>3. भक्तिकालकी सामान्य परिस्थितियों तथा विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे<br>4. प्रमुख भक्तिकालीन कवियों और उनकी रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगे |

अंक विभाजन प्रश्न संख्या 1 ( सप्रसंग व्याख्याओं का है) कुल चार काव्यांश एक कवि से एक व्याख्या आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे अंक 8×4= 32

प्रश्न संख्या 2,3,4,5 निबंधात्मक प्रश्न है, प्रत्येक कवि से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 7×4= 28

प्रश्न संख्या 6 ( संक्षिप्त टिप्पणी ) भक्तिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियां एवं अंतर्दशाएं 2 टिप्पणी आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 2×5=10

**इकाई I**

: भक्ति : अर्थ, परिभाषा,स्वरुप

: भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां

: भक्तिकालीन साहित्य की अंतरधाराएं ( सन्त साहित्य, सूफी साहित्य, रामभक्ति काव्यधारा, एवं कृष्ण भक्ति काव्यधारा तथा लौकिक काव्य)

**इकाई II**

: भक्तिकालीन साहित्य की अंतरधाराएं ( सन्त साहित्य, सूफी साहित्य, रामभक्ति काव्यधारा, एवं कृष्ण भक्ति काव्यधारा तथा लौकिक काव्य)

**इकाई II**

**कबीर** : कबीर ग्रंथावली, संपादक श्यामसुंदर दास, परिमार्जित पाठ पुरुषोत्तम अग्रवाल

**कबीरदास**

**साखी** –

1. गुरुदेव को अंग
2. मन को अंग

**पद** -

1. मन रे जागत रहियो माई..... 23
2. पांडे कौन कुमति तोहि लागी .....39
3. पंडित वाद वदन्ते झूठा ..... 30
4. मन रे हरि भज हरि भज भाई ..... 102
5. पंडित होइ सुपरहि दिखाई ..... 159

**सूरदास-**

रामचन्द्र शुक्ल भ्रमरगीत सार, संपादक

- ऊधो अखियां अति अनुरागी
- आयो घोस बडो व्यापारी
- ऊधो मन नाहीं दस-बीस
- निर्गुण कौन देस को वासी
- हमारे हरि हारिल की लकरी
- उर में माखन चोर अडे
- मधुकर श्याम हमारे चोर
- ऊधो भली करी ब्रज आए
- बिन गोपाल बैरिन भई कुंजें
- लखियत कालिन्दी अति कारी

**तुलसीदास-**

विनयपत्रिका

1. केशव कहिन जाइ का कहिए
2. मोहि मूढ़ मन बहुत बिगोयो
3. मन पछितैयै अवसर बीते

**रामचरितमानस (बालकाण्ड)-**

(दोहा संख्या 229 से 234) कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि निरखि-निरखि रघुवीर छत्रि, बाढ़हि प्रीति.. )

जायसी-

**जायसी ग्रंथावली- संपादक रामचन्द्र शुक्ल**

- सिंहलद्वीप वर्णन खण्ड, प्रथम 05 दोहे तक
- नागमति वियोग खण्ड, प्रथम 05 दोहे तक

मीरा -

- मीरां पदावली शंभूसिंह मनोहर निपट बंकट छब अटकू (10)
- माई म्हाँ गोविन्द गुण गास्यां (31),
- राणाजी थे जहर दियां म्हे (38)
- मीरां मगन भई हरि के गुण गाम (41),
- जोगिया जी निस दिन जॉऊं बाट-42
- हरि बिन कॅण गती (52),
- सखी म्हारी नींद नसानी हो (87)

**रसखान**

रसखान रचनावली, संपादक विद्यानिवास मिश्र

पद संख्या 1.2.4.6.8.11.14.15,

आंतरिक मूल्यांकन हेतु भक्तिकालीन साहित्य से सम्बंधित विषयों पर निबन्ध लेखन, परियोजना,असाइनमेंट,चार्ट,प्रतियोगिता या मौखिक गतिविधियां 30 अंक

अनुशंसित ग्रंथ-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास :डॉ. नगेन्द्र, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास :डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी सूफी काव्य की भूमिका :रामपूजन तिवारी

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
जयपुर

# पाठ्यक्रम (SYLLABUS)

## शास्त्री/बी ए द्वितीय सेमेस्टर
## हिंदी साहित्य द्वितीय प्रश्नपत्र- हिन्दी उपन्यास
## ग्लोबल गाँव के देवता – रणेंद्र

प्रश्नपत्र
लिखित परीक्षा 70 अंक
आंतरिक मूल्यांकन 30 अंक
कुल 100 अंक

| | |
|---|---|
| **उद्देश्य (Objectives)** | 1 विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति और विश्लेषणात्मक योग्यता का विकास करना।<br>2.उपन्यास साहित्य के विश्लेषण की समझ और संवेदनात्मक अनुभूति का विकास करना।<br>3. प्रमुख उपन्यासकारों एवं उनकी रचनाधर्मिता का परिचय कराना।<br>4 उपन्यास कला को विकसित करना। |
| **अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)** | अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)<br>1. जीवन की यथार्थ अनुभूति से परिचय हो सकेगा।<br>2. उपन्यास लेखन तथा उसके प्रभाव का विश्लेषण सम्भव हो सकेगा।<br>3. आदर्श और सभ्य नागरिक बन सकेंगे।<br>4. आत्माभिव्यक्ति की भावना विकसित हो सकेगी तथा भावी लेखन की पृष्ठभूमि का विकास होगा। |

**प्रश्नपत्र का अंक विभाजन**

यह प्रश्नपत्र दो खण्डों (I,II, में विभाजित है।

अंक विभाजन प्रश्न संख्या 1 ( सप्रसंग व्याख्याओं का है) कुल चार अवतरण संकलित उपन्यास से आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे अंक 8×4= 32

प्रश्न संख्या 2,3,4,5 निबंधात्मक प्रश्न है, उपन्यास सेन चार प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 7×4= 28

प्रश्न संख्या 6 ( संक्षिप्त टिप्पणी )हिन्दी उपन्यास साहित्य स्वरूप,उद्भव एवं विकास 2 टिप्पणी आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 2×5=10

### इकाई - 1

उपन्यास परिभाषा एवं तत्त्व
हिन्दी उपन्यास के उद्भव एवं विकास के प्रमुख चरण परिभाषा एवं तत्त्व
हिन्दी उपन्यास के प्रमुख प्रकार
उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द एवं अन्य उपन्यासकार
पाठ्यक्रम में निर्धारित उपन्यास की मूल संवेदना एवं शिल्प-विधान
हिन्दी के प्रमुख उपन्यास

## इकाई - 2

ग्लोबल गाँव के देवता – रणेंद्र

आंतरिक मूल्यांकन हेतु हिन्दी उपन्यास साहित्य से सम्बंधित विषयों पर निबन्ध लेखन, परियोजना,असाइनमेंट,चार्ट,प्रतियोगिता या मौखिक गतिविधियां 30 अंक

अनुशंसित ग्रंथ-

1ग्लोबल गाँव के देवता – रणेंद्र
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रधारिणी सभा, काशी
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. नगेन्द, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली
5. हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास रामस्वरूप चतुर्वेदी
6. हिंदी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

जयपुर

# पाठ्यक्रम (SYLLABUS)

## शास्त्री/बी ए तृतीय सेमेस्टर

## हिंदी साहित्य प्रथम प्रश्नपत्र- रीति काव्य

प्रश्नपत्र

लिखित परीक्षा 70 अंक

आंतरिक मूल्यांकन 30 अंक

कुल 100 अंक

| | |
|---|---|
| **उद्देश्य** | 1 विद्यार्थियों को रीति काल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि परिस्थितियों से अवगत कराना<br>2. रीति कालीन काव्य एवं कवियों से परिचय कराना<br>3. रीति कालीन साहित्य के स्वरूप, भाषा एवं शैली की विकास यात्रा से अवगत कराना<br>4. रीति कालीन साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट करना<br>5. विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना |
| **अधिगम प्रतिफल** | 1. रीतिकालीन परिवेश राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा अन्य आदिकालीन परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे<br>2. रीतिकालीन साहित्य के शोध की नवीन दृष्टि का विकास हो सकेगा<br>3. रीतिकाल की सामान्य परिस्थितियों तथा विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे<br>4. प्रमुख रीतिकालीन कवियों और उनकी रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगे |

सेमे. III

अंक विभाजन प्रश्न संख्या 1 ( सप्रसंग व्याख्याओं का है) कुल चार काव्यांश एक कवि से एक व्याख्या आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे अंक 8×4= 32

प्रश्न संख्या 2,3,4,5 निबंधात्मक प्रश्न है, प्रत्येक कवि से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 7×4= 28

प्रश्न संख्या 6 ( संक्षिप्त टिप्पणी ) रीति कालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृतियां एवं अंतर्दशाएं 2 टिप्पणी आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 2×5=10

### इकाई I

: रीति का अर्थ ,परिभाषा,भेद

: रीति कालीन काव्य की प्रमुख प्रवृतियां,परिस्थितियाँ

: रीति कालीन साहित्य की अंतरधाराएं रीतिबद्ध(रीति सिद्ध रीतिमुक्तसाहित्य, रीति कालीन वीर साहित्य, नीति साहित्य, एवं लौकिक काव्य)

### इकाई II

खण्ड - अ

1. **केशवदास** रामचंद्रिका – सम्पादक – लाला भगवानदीन

रावण - अंगद संवाद

2. **बिहारी** बिहारी रत्नाकार जगन्नाथ दास रत्नाकर

1. मेरी भव बाधा हरौ..
2. जम-करि-मुँह-तरहरि परयौं..
3. कौन भाँति रहि है बिरदु
4. .कहत नटत्, रीझत, खिझत.
5. नहि पराग नहि मधुर मधु
6. दीरघ साँस न लेहि दुख...
7. थोरे ही गुन रीझते.
8. तंत्री-नाद कवित्त-रस
9. गा अनुरागी, चित्त की
10. जप माला छापा तिलक
11. भूषन भारू सम्भारि है..
12. अंग-अंग नग जगमगत दीपशिखा सी देह.
13. कहलाने एकत बसत अहि मयूर मृग बाघ.....
14. कौं कहि सकै बड़ेन सौं लखै बड़ी हू भूल..
15. घरू-घरू डोलत दीन है
16. आवत जात न जानियतु...
17. बड़े न हुजे गुनन बिनु.....
18. कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय
19. तजि तीरथ हरि राधिका..
20. जिन दिन देखे यै कुसुम
21. स्वास्थु सुकृतु न श्रम वृथा
22. नर की अरू नल-नीर की
23. कहत सबै, बेदी दिय.....
24. दृग उरझत्, टूटत कुटुम
25. रनित भृंग -घंटावली

3 . **देव**

- जाकै न काम न क्रोध विरोध.....
- कोऊ कहाँ कुलटा कुलीन अकुलीन कहो .
- रावरौ रूप रहयौं भरि नैनन
- गंग तरंगिन बीच बरंगिनि
- ऐसे जु हौं जानत कि जैहे तु विषय के संग..
- डार द्रुम पालना बिछौना नव पल्लव के
- जब तै कुंवर कान्ह रावरी कला-निधान
- राधिका कान्ह को ध्यान करै तंब ....
- दूध सौं जोबन माखन सो मन
- को बचिहै यह बैरी बसन्त पै आवत...
-

4 **भूषण**

- साजि चतुरंग सैन अंग मैं उमंग धारि सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
- बाने फहराने घहराने घंटा गजन के नाहीं ठहराने रावराने देसदेस के
- बेद राखे बिदित पुरान परसिद्ध राखे राम-नाम राख्यो अति रसना सुघर में।
- उत्तरि पलंग तें न दियो हैं धरा पै पग तेऊ सगबग निसिदिन चली जाती है।
- ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।
- अतर गुलाब चोया चंदन सुगंध सब सहज सरीर की सुबास बिकसाती है।
- सोंधे को अधार किसमिस जिनको अहार चार अंक-लंक मुख चंदके समानी है।
- आपस की फूट ही तें सारे हिंदुवान टूटे टूट्यो कुल रावन अनीति अति करतें।
- भुज-भुजगेस की बैसंगिनी भुजंगिनी सी खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलन के
- अति सौंधे भरी सुखमा सु खरी मुख ऊपर आइ रहीं अलकैं।

आंतरिक मूल्यांकन हेतु रीति कालीन साहित्य से सम्बंधित विषयों पर निबन्ध लेखन, परियोजना,असाइनमेंट,चार्ट,प्रतियोगिता या मौखिक गतिविधियां 30 अंक

अनुशंसित ग्रंथ-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रधारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. नगेन्द, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी सूफी काव्य की भूमिका रामपूजन तिवारी

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

जयपुर

# पाठ्यक्रम (SYLLABUS)

## शास्त्री/बी ए तृतीय सेमेस्टर

## हिंदी साहित्य द्वितीय प्रश्नपत्र- एकांकी एवं अन्य कथेतर विधाएं

प्रश्नपत्र

लिखित परीक्षा 70 अंक

आंतरिक मूल्यांकन 30 अंक

कुल 100 अंक

| | |
|---|---|
| **उद्देश्य (Objectives)** | 1 विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति और विश्लेषणात्मक योग्यता का विकास करना।<br>2. एकांकी एवं अन्य कथेतर विधाएं साहित्य के विश्लेषण की समझ और संवेदनात्मक अनुभूति का विकास करना।<br>3. प्रमुख उपन्यासकारों एवं उनकी रचनाधर्मिता का परिचय कराना।<br>4 उपन्यास कला को विकसित करना। |
| **अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)** | अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)<br>1. जीवन की यथार्थ अनुभूति से परिचय हो सकेगा।<br>2. एकांकी एवं अन्य कथेतर विधाएं लेखन तथा उसके प्रभाव का विश्लेषण सम्भव हो सकेगा।<br>3. आदर्श और सभ्य नागरिक बन सकेंगे।<br>4. आत्माभिव्यक्ति की भावना विकसित हो सकेगी तथा भावी लेखन की पृष्ठभूमि का विकास होगा। |

**प्रश्नपत्र का अंक विभाजन**

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (I,II,III) में विभाजित है।

अंक विभाजन प्रश्न संख्या 1 ( सप्रसंग व्याख्याओं का है) कुल चार अवतरण 2 एकांकी व 2 संकलित गद्य विधाओं से व्याख्या आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे अंक 8×4= 32

प्रश्न संख्या 2,3,4,5 निबंधात्मक प्रश्न है, 2 एकांकी व 2 संकलित गद्य विधाओं से आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 7×4= 28

प्रश्न संख्या 6 ( संक्षिप्त टिप्पणी )हिन्दी गद्य साहित्य स्वरूप,उद्भव एवं विकास

2 टिप्पणी आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 2×5=10

### इकाई - 1

एकांकी परिभाषा एवं तत्त्व

हिन्दी एकांकी के उद्भव एवं विकास के प्रमुख चरण

हिन्दी गद्य की विविध विधाएं

पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं की मूल संवेदना एवं शिल्प-विधान

हिन्दी के प्रमुख रचनाकार

### इकाई - 2

. एकांकी

उत्सर्ग : रामकुमार वर्मा

तौलिये : उपेन्द्र नाथ अश्क

हरितगंधा : हमीदुल्ला

इकाई - 3

कथेतर-गद्य

1. रेखाचित्र प्रोफेसर शशांक- विष्णुकान्त शास्त्री
2. आत्मकथा बिस्मिल का जीवन रामप्रसाद बिस्मिल

3. संस्मरण तीस बरस का साथी रामविलास शर्मा
4. यात्रावृत्त चीड़ों पर चांदनी निर्मल वर्मा
5. रिपोर्ताज अदम्य जीवन रांगेय राघव

आंतरिक मूल्यांकन हेतु गद्य कहानी साहित्य से सम्बंधित विषयों पर निबन्ध लेखन, परियोजना,असाइनमेंट,चार्ट,प्रतियोगिता या मौखिक गतिविधियां

अनुशंसित ग्रंथ-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रधारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. नगेन्द, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

जयपुर

# पाठ्यक्रम (SYLLABUS)

## शास्त्री/बी ए चतुर्थ सेमेस्टर

## हिंदी साहित्य प्रथम प्रश्नपत्र- रीति काव्य

प्रश्नपत्र

लिखित परीक्षा 70 अंक

आंतरिक मूल्यांकन 30 अंक

कुल 100 अंक

| | |
|---|---|
| **उद्देश्य** | 1 विद्यार्थियों को रीति काल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि परिस्थितियों से अवगत कराना<br>2. रीति कालीन काव्य एवं कवियों से परिचय कराना<br>3. रीति कालीन साहित्य के स्वरूप, भाषा एवं शैली की विकास यात्रा से अवगत कराना<br>4. रीति कालीन साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट करना<br>5. विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना |
| **अधिगम प्रतिफल** | 1. रीतिकालीन परिवेश राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा अन्य आदिकालीन परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे<br>2. रीतिकालीन साहित्य के शोध की नवीन दृष्टि का विकास हो सकेगा<br>3. रीतिकाल की सामान्य परिस्थितियों तथा विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे<br>4. प्रमुख रीतिकालीन कवियों और उनकी रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगे |

अंक विभाजन प्रश्न संख्या 1 ( सप्रसंग व्याख्याओं का है) कुल चार काव्यांश एक कवि से एक व्याख्या आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे अंक 8×4= 32

प्रश्न संख्या 2,3,4,5 निबंधात्मक प्रश्न है, प्रत्येक कवि से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 7×4= 28

प्रश्न संख्या 6 ( संक्षिप्त टिप्पणी ) रीति कालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियां एवं अंतर्दशाएं 2 टिप्पणी आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 2×5=10

### इकाई I

: रीति का अर्थ ,परिभाषा,भेद

: रीति कालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां,परिस्थितियाँ

: रीति कालीन साहित्य की अंतरधाराएं रीतिबद्ध(रीति सिद्ध रीतिमुक्तसाहित्य, रीति कालीन वीर साहित्य, नीति साहित्य, एवं लौकिक काव्य)

### इकाई II

**घनानंद**

1. छवि कौ सदन, मोदमंडित बदन-चन्द
2. भोर, ते सांझ लौं कानन ओर निहारति बावरी नैक न हारति
3. सोएँ न सोयबो, जागे न जाग, अनोखियै लाग सु आँखिन लागी
4. नित धौस खरी, उर मांझ अरी, छवि रंग-भरी मुरि चाहनि की

5. अन्तर उदेग - दाह, आँखिन प्रवाह-आँसू.
6. नैनन मैं लागै जाय, जागै सु करेजे बीच
7. दिननि के फेर सों, भयो है हेर-फेर ऐसौं
8. कौन की सरन जैये आप त्यों काहू पैये
9. जासौं प्रीति ताहि नितुराई सौ निपट नेह,
10. मीत सुजान अनीत करै जिन, हा हा न हूजियै मोहि अमोहि

**आलम**

1. रुचिर बरन चीरू चन्दन चरचि रूचि ..
2. आँखियी भली जू ऐसे अँसुवनि धारै, नातो,
3. चाहती सिंगार तिन्हें सिंगी को सगाई कहा,
4. बारै तें न पलक लगत बिनु सांवरे ते,
5. सीत रिपु भीत भई छाती राती ताती तई
6. लता प्रसून डोल बोल कोकिला अलाप केकि,
7. पालन खेलत नन्द ललन छलन बलि,
8 . दैहों दधि मधुर धरनि धर्यो छोरि खैहैं,
9. नीके न्हाइ धोइ धूरि पैठो नेक बैठो आनि,
10. गोरस सुढौरी लिये संभु ताको मत दिये,

**पद्माकर**

1. कूलन में, केलिन, कछारन में कुंजन में
2. औरै भाँति कुंजन में गुंजरत भौंरे-भीर.
3. चंचला चमाकै चहुँ ओरन तें चाह-भरी,..
4. आयी ही खेलन फाग इहाँ वृषभानपुरी तें सखी सँग लीने।
5. सीज ब्रज चंद पै चली यों मुखचंद जा को,
6. ऐसी न देखी सुनी सजनी धनी बाढ़त जात बियोग की बाधा।...
7. तीर पर तरनि-तनूजा के तमाल-तरे
8. फहरे निसान दिसानि जाहिर, धवल दल बक पांत से
9. सिर कटहिं, सिर कटि धर कटहिं, धर कटि सुहय कटि जात है.
10. किल किलकत चंडी, लहि निज खंडी, उमडि, उमंडी, हरषति है.

**सेनापति**

1. राखति न दोषै पोषै पिंगल के लच्छन कौं,
2. बानी सौं सहित सुबरन मुँह रहै जहाँ
3. करत कलोल स्रुति दीरघ, अमोल, तोल,
4. कालिंदी की धार निरधार है अधर, गन.....
5. सोहै सँग आलि, रही रति हु के उर सालि,
6. मालती की माल तेरें तन की परस पाइ,
7. मानहु प्रबाल ऐसे ओठ लाल लाल, भुज,
8. बरन बरन तरू फूले उपवन बन,

आंतरिक मूल्यांकन हेतु रीति कालीन साहित्य से सम्बंधित विषयों पर निबन्ध लेखन, परियोजना,असाइनमेंट,चार्ट,प्रतियोगिता या मौखिक गतिविधियां 30 अंक

अनुशंसित ग्रंथ-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रधारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. नगेन्द, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी सूफी काव्य की भूमिका रामपूजन तिवारी

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

जयपुर

# पाठ्यक्रम (SYLLABUS)

## शास्त्री/बी ए चतुर्थ सेमेस्टर

## हिंदी साहित्य द्वितीय प्रश्नपत्र- नाटक हानूश : भीष्म साहनी

प्रश्नपत्र

लिखित परीक्षा 70 अंक

आंतरिक मूल्यांकन 30 अंक

कुल 100 अंक

| | |
|---|---|
| **उद्देश्य (Objectives)** | 1 विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति और विश्लेषणात्मक योग्यता का विकास करना।<br>2. नाटक साहित्य के विश्लेषण की समझ और संवेदनात्मक अनुभूति का विकास करना।<br>3. प्रमुख नाटक कारों एवं उनकी रचनाधर्मिता का परिचय कराना।<br>4 नाटक कला को विकसित करना। |
| **अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)** | अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)<br>1. जीवन की यथार्थ अनुभूति से परिचय हो सकेगा।<br>2. नाटक लेखन तथा उसके प्रभाव का विश्लेषण सम्भव हो सकेगा।<br>3. आदर्श और सभ्य नागरिक बन सकेंगे।<br>4. आत्माभिव्यक्ति की भावना विकसित हो सकेगी तथा भावी लेखन की पृष्ठभूमि का विकास होगा। |

### प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (I,II) में विभाजित है।

अंक विभाजन प्रश्न संख्या 1 ( सप्रसंग व्याख्याओं का है) कुल चार अवतरण नाटक से व्याख्या आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे अंक 8×4= 32

प्रश्न संख्या 2,3,4,5 निबंधात्मक प्रश्न है, हानूश नाटक से आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे

अंक 7×4= 28

प्रश्न संख्या 6 ( संक्षिप्त टिप्पणी )हिन्दी नाटक साहित्य स्वरूप,उद्भव एवं विकास

2 टिप्पणी आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे अंक 2×5=10

### इकाई - 1

नाटक परिभाषा एवं तत्त्व

हिन्दी नाटक के उद्भव एवं विकास के प्रमुख चरण

पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं की मूल संवेदना एवं शिल्प-विधान

हिन्दी के प्रमुख नाटककार

### इकाई – 2

नाटक हानूश : भीष्म साहनी

आंतरिक मूल्यांकन हेतु नाटक साहित्य से सम्बंधित विषयों पर निबन्ध लेखन, परियोजना,असाइनमेंट,चार्ट,प्रतियोगिता या मौखिक गतिविधियां

अनुशंसित ग्रंथ-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रधारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. नगेन्द, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

जयपुर

# पाठ्यक्रम (SYLLABUS)

## शास्त्री तृतीय वर्ष(वार्षिक पद्धति)

## हिन्दी साहित्य प्रथम प्रश्न पत्र

## आधुनिक काव्य

पूर्णांक 100 उत्तीर्णांक 36

**खण्ड 'अ**

**1. मैथिलीशरण गुप्त** साकेत नवम सर्ग

1. वैदने तू भी भली बनी .....पाऊं प्राण धनी
2. निरख सखी ये खंजन आये .....अश्रू सूखा कर लाये
3. विरह संग अभिसार भी .....और एक संसार भी
4. दोनों ओर प्रेम पलता है .....मुझे यही खलता है।
5. आ आ मेरी निंदिया मूंगी.. मैं न्यौछावर हूँ जी
6. कहती मैं, चातकि फिर बोल..... उर के कल-कल्लोल।
7. रखि निरखि नदी की धार..... आगे नखीं सहागै

यशोधरा

1. सखि, ये मुझसे कहकर जाते
2. अब कठोर हो वज्रादपि ओ कुसुमादपि सुकुमारी

**2. जयशंकर प्रसाद**

कामायनी चिन्ता सर्ग

**3. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला**

1. तुलसीदास प्रथम पांच छंद
2. दिवसावसान का समय

**4. अज्ञेय**

1. नदी के द्वीप
2. आज थमा हिय हारिल मेरा
3. जो पुल बनाएंगे

**5. धूमिल**

1. अकाल दर्शन
2. रोटी और संसद

**6. नागार्जुन**

1. बादल को घिरते देखा है।
2. अकाल और उसके बाद

**7. माखनलाल चतुर्वेदी**

1. पुष्प की अभिलाषा
2. कैदी और कोकिला

**8. मुक्तिबोध** ब्रह्मराक्षस

**खण्ड 'ब'**

खण्डकाव्य संशय की एक रात : नरेश मेहता

**खण्ड स**

आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृतियां,राष्ट्रीय काव्यधारा, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता

अंक विभाजन

खण्ड 'अ' 'ब' से चार व्याख्याएं (एक कवि से केवल एक व्याख्या) (खण्ड ब में से एक व्याख्या अनिवार्य) (विकल्प देय)
4 x 10 =40 अंक
खण्ड अ व ब से तीन आलोचनात्मक प्रश्न (खण्ड ब से एक प्रश्न अनिवार्य) (विकल्प देय) 3x15-45 अंक खण्ड स
निर्धारित पाठ्यवस्तु से संबंधित एक प्रश्न (विकल्प देय) 1×15=15

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

जयपुर

# पाठ्यक्रम (SYLLABUS)

## शास्त्री तृतीय वर्ष (वार्षिक पद्धति)

## हिन्दी साहित्य द्वितीय प्रश्न पत्र

## भाषा, काव्यशास्त्र एवं निबन्ध

पूर्णांक 100 उत्तीर्णांक 36

### खण्ड 'अ' भाषा

1. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास
2. देवनागरी लिपि महत्व, वैज्ञानिकता तथा सुधार
3. राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति, समस्याएं तथा समाधान

### खण्ड 'ब' काव्य शास्त्र

परिभाषा और महत्व

1. अलंकार
   - परिभाषा और महत्व
   - अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विभावना, अपन्हुति
2. छंद
   - परिभाषा और महत्व
   - दोहा, चौपाई. छप्पय, रोला, मालिनी, शिखरणी, दुत्तविलम्बित, हरिगीतिका
3. रस
   - परिभाषा,रस के अवयव, रस सिद्धान्त और रस के प्रकार
4. गुण
   - माधुर्य, ओज, प्रसाद
5. शब्द शक्ति
   - अभिधा, लक्षणा, व्यंजना

### खण्ड 'स' निबंध

| | |
|---|---|
| 1. सरदार पूर्ण सिंह | आचरण की सभ्यता |
| 2. रामचन्द्र शुक्ल | लोभ और प्रीति |
| 3. हजारी प्रसाद द्विवेदी | भारतीय साहित्य की प्राणशक्ति |
| 4. नंद दुलारे वाजपेयी | साहित्य और सामाजिक जीवन |
| 5. रामविलास शर्मा | तुलसी के सामंत विरोधी मूल्य |
| 6. विद्यानिवास मिश्र | तुम चंदन हम पानी |
| 7. कुबेरनाथ राय | उत्तरा फाल्गुनी के आस-पास |

अंक विभाजन

खण्ड अ

निर्धारित पाठ्यवस्तु पर दो प्रश्न (विकल्प देय) 10 x 2 =20 अंक

खण्ड ब

एक प्रश्न रस और अलंकार से संबंधित (विकल्प देय) 10 x 1= 10 अंक

एक प्रश्न छंद,गुण,शब्दशक्ति से संबंधित (विकल्प देय) 10 x 1= 10 अंक

खण्ड स

कुल चार व्याख्याएं (एक निबंध से केवल एक व्याख्या) विकल्प देय 7x4 = 30

दो आलोचनात्मक प्रश्न (एक निबंध से केवल एक प्रश्न) 15x2=30

# जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

## SYLLABUS

## सत्र-2024-25

रामानन्दाचार्य राज० संस्कृत विश्वविद्यालय
पत्र प्राप्ति
सं. 1231
दि. 19/12/24

(Three/Four Year Under Graduate Programme)

## शास्त्री / बी०ए० चतुर्थ सेमेस्टर सामान्य हिन्दी - अनिवार्य विषय

समय : तीन घण्टे पूर्णांक – 50 (लिखित परीक्षा - 35 आन्तरिक मूल्यांकन - 15 अंक)

1. साहित्य खण्ड - गद्य-पद्य की निर्धारित रचनाएं

गद्य भाग

- हार की जीत - सुदर्शन (कहानी)
- नाखून क्यों बढ़ते हैं - आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ( निबंध)
- असीग ओ ससीम के बीच - अज्ञेय (संस्मरण)
- गौरा - महादेवी वर्मा (रेखाचित्र)
- प्रेमचंद के फटे जूते - हरिशंकर परसाई ( व्यंग्य)
- स्टिल लाइफ - फणीश्वरनाथ रेणु (रिपोर्ताज )
- साध्य -साधन एकत्व - नन्दकिशोर आचार्य
- आज भी खरे हैं तालाब - अनुपम मिश्र (पर्यावरणीय निबंध)

पद्य भाग

**कबीर** - कबीर ग्रंथावली, सं. श्यामसुंदर दास

- सुमिरन को अंग साखी संख्या-17, 21, 27, 29
- विरह को अंग साखी संख्या 3, 5, 20, 29
- चितावणी कौ अंग साखी संख्या 2,8,12,18

**सूरदास** - सूरसागर सार - सं. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा

- विनय भक्ति पद 21,33

19/12/2024

(प्रो० शालिनी सक्सेना)
(संकायाध्यक्ष)

(संयोजक)

- यशोदा हरि पालने झुलाये, खेलत में को काको गुसैया
- मैया मोहि दाऊ बहुत खिम्रयों, आये जोग सिखावन पाण्डे कुल 6 पद

**तुलसीदास**

- रामचरित मानस लंका काण्ड (रावनुरथी विरथ....निज प्रभुआन )

**मीरा** - मीरा पदावली सं. शम्भू सिंह मनोहर

- मन रे परस हरि के चरण (01), थारो रूप देख्यां अटकी (9)
- मोहे रावरे के रंग की राँची (19) मैं तो गिरिधर के घर जाऊ (20) महँ गिरिधर के रंग राती (26)

**रहीम** - रहीम ब्रंथावली सं. विद्यानिवास मिश्र तथा डॉ. गोविन्द रजनीश दोहा संख्या 186, 191, 211, 212, 214, 218, 219, 220, 223,224 (10 दोहे )

**मैथिलीशरण गुप्त** साकेत - कैकेयी अनुताष

- तदनन्तर बैठी सभा उटज के आगे....विनय आज यह माता

**निराला** यह तोडती पत्थर, भिक्षुक

**अज्ञेय** भीतर जागा दाता

**नागार्जुन** - कालिदास के प्रति

2. **व्याकरण खण्ड –**

व्याकरण खण्ड-निबन्ध (शब्द सीमा 300 शब्द), कार्यालय लेख शासकीय अर्द्धशासकीय पत्र, परिपत्र, अधिसूचना, कार्यालय ज्ञापन, विज्ञप्ति, कार्यालय आदेश। संक्षेपण, पल्लवन, शब्द निर्माण की प्रविधि-उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास। वाक्य शुद्धि / शब्द शुद्धि, मुहावरे, पारिभाषिक शब्दावली, व्याकरणिक कोटियां संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण।

**अंक विभाजन -** प्रश्नपत्र के दो भाग होंगे - 'साहित्य खण्ड व्याकरण खण्ड। साहित्य खण्ड में दो भाग होंगे। गद्य भाग एवं पद्य भाग। प्रत्येक भाग के लिये 10 अंक निर्धारित है। इस प्रकार साहित्य खण्ड कुल 20 अंक का होगा। जिसमें अंकों का विभाजन निम्न प्रकार का होगा

1. गद्य भाग से एक व्याख्या 1x4 = 4
2. गद्य भाग से दो आलोचनात्मक प्रश्न 2x3 = 6
3. पद्य भाग से एक व्याख्या - 1x4 = 4
4. पद्य भाग से दो आलोचनात्मक प्रश्न - 2x3 = 6
5. व्याकरण खण्ड कुल 15 अंक का होगा

- कार्यालयी लेख 2 अंक
- संक्षेपण 2 अंक
- पल्लवन 2 अंक
- शब्द निर्माण की प्रविधि - 3 अंक
- वाक्य शुद्धि शब्द शुद्धि = 2 अंक
- मुहावरे एवं लोकोक्ति 2 अंक
- पारिभाषिक शब्दावली 2 अंक

**प्रत्येक प्रश्न में आंतरिक विकल्प अनिवार्य रूप से देय है।**

**आन्तरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं चार विषयों पर निबंध लेखन।**